ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 114-116

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित स्त्री और परिवारविमर्श

एस.राजलक्ष्मी

सहायक प्राध्यापिका,हिन्दी विभाग, लोयोला महाविद्यालय चेन्नई (आन्ध प्रदेश), भारत

Received- 05.03.2020, Revised- 10.03.2020, Accepted - 15.03.2020 E-mail: padmajashree.s2@gmail.com

सारांश : *भारतीय संस्कृति के आदर्श है,"वासुदेव कुटुंबकम"माने सारा विश्व एक परिवार है। परिवार व्यक्तियों का समूह होता है। परिवार के बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती है । हमारे देश में संयुक्तपरिवार बदलते परिवेश में एकल परिवार बन गया है। परिवार सदस्यों का समाजीकरण करता है। साथ ही सामाजिक नियंत्रण का कार्य करता है कि उनकी सभी रिश्तेदार संबंधों की मर्यादा से जुड़ी होती है एक परिवार में अनुशासन और आजादी दोनों ही होती है। नगरीकरण परिवारों के रिश्तों को नष्ट कर दिया है । रोजगार हेतु नगरों के छोटे–छोटे घरों में रहने के लिए विवश हो गया है उसके पास उतनी जगह नहीं कि वह पूरे परिवार के साथ रह सकें बढ़ती महत्वाकांक्षा ने संयुक्त परिवारों को विखंडितकिया है। अधिक सुख सुविधाएं मिलने के कारण व्यक्ति नगर में ही बस जाते हैं ।किंतु परिवार की संरचना और कार्य में जो परिवर्तन आज हम देख रहे हैं उसके लिए मुख्य कारण आधुनिकता है ।औद्योगिक क्रांति ने पाश्चात्य देशों में परंपरागत संयुक्त परिवार नष्ट कर दिया है, जिसके कारण से बढ़ते हुए यंत्रीकरण के फल श्रुति को परिवार से बाहर मिली आजीविका सुरक्षा और उन्नति की सुविधाओं को कहा गया है।*

कुंजीभूत शब्द– वासुदेव कुटुंबकम, संयुक्तपरिवार, परिवेश, समाजीकरण, रिश्तेदार, नगरीकरण, अनुशासन।

भारत में भी औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था और औद्योगिक तथा आर्थिक संगठन का प्रारंभ कई वर्ष पहले हुआ था ।भाषा की विचारधारा और पाश्चात्य ढंग की शिक्षा दीक्षा तथा दर्शन का प्रभाव भी कम नहीं है विशेषकर स्वाधीनता के बाद विवाह ,उत्तराधिकार,संपत्ति का अधिकार के संबंध में जो कानून लागू किए गए हैं,उन्हें परिवार की संयुक्त प्रणाली के लिए हानिकारक कारणहै। आधुनिक युग में परिवार की आदर्श ही बदल चुका है।

18 वीं सदी केमानवतावाद और औद्योगिक क्रांति में महिलाओं की समस्या और उनके प्रश्नों की पड़ताल दिखाई देती है ।स्त्रियों के लिए व्यापकअवसरप्रदान किए जाने का स्वर पहले ही उठ चुका था जिसमें पहला स्वरडंतलॅवससेजवदमबतंजि की पुस्तक " स्त्रियों के अधिकारों की बहाली" (The Vindication of Rights of Women)का था ।आंदोलन के रूप में इसकी शुरुआत 1848 से होती है जब "एलिजाबेथकेंडीस्टैण्डन"," लुक्रेसियाकठिन मोर"और कुछ अन्य ने न्यूयॉर्क में महिला सम्मेलन करके 'नारीस्वतंत्रता' पर एक घोषणापत्र (A Declaration of Sentiment) जारी किया, जिसमें पूर्ण कानूनी समानता ,शैक्षिक और व्यावसायिक अवसर ,समान मुआवजा, मजदूरी कमाने तथा वोट देने के अधिकार की मांग की गई थी । इसके पूर्व 1845 में ँवउमद पद जीम छपदमजममदजी बमदजनतल (Margaret Fuller) की पुस्तक आती है जोयूरोप में उठेस्त्री अधिकारों के मुद्दों को सामने आती है। 1946 मैं नारी दशा पर संयुक्त राष्ट्र गठित किया जिसका दायित्व विश्वभर की महिलाओं के लिए समान राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक अधिकार दिलाना था , जिसके तहत 1948 में विश्व स्तर पर स्त्री और पुरुष समान अधिकार (The Equal rights of men and women) कानून पारित हुआ 1960 तक आते–आते स्त्री मुक्ति आंदोलन एक नया रूप लेता है जिसके तहत 1966 में राष्ट्रीय महिला संगठन (National Organization ofWomen)का गठन होता है, जिसकी 400 से भी अधिक स्थानीय शाखाएं 1970 के आरंभ में खुलती है ।इन संगठनों ने गर्भपात सुधार, संघीय राज्य द्वाराअनुपोषित शिशु देखभाल केंद्र महिलाओं के लिए समान वेतन, महिलाओं की पेशों में तरक्की और महिलाओं के लिए शिक्षा, राजनीतिक प्रभाव और आर्थिक सत्ता हासिल करने की दिशा में समान कानून और सामाजिक बाधाओं के खात्मे के लिए प्रयास किया ।सामाजिक नारीवादी इस विचारधारा के अंतर्गत समाज में स्त्री के शोषण के कारणों को जानना व उन पर नए सिरे से अध्ययन करना था जैसे कि नारीवादियों द्वारा देखा गया कि केवल पूंजी ही स्त्रीकी शोषण का कारण नहीं है ।वह आर्थिक रूप से सक्षम हो भी जाये तभी वह शोषित होती है, जिसके कारण पुरुष सत्ता का वर्चस्व का उनके मन में विद्यमान जातीय श्रेष्ठता का बोध है ।अतः नारीवादियों द्वारा समाज के इस परंपरावादी ढांचे में बदलाव लाने का प्रयास किया गया , जिसमें सर्वप्रथम परिवार तथा विवाह नामक संस्थाओं पर प्रश्न खड़े किए। इस प्रकार से आगे बढ़ने की प्रक्रिया में स्त्री विमर्श में भी नई–नई विचारधाराओं का आगमन होता गया, जिसमें 80 व 90

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

दशक के बाद सांस्कृतिक, समलैंगिक, आर्थिक ,उत्तर आधुनिक, उत्तर नारीवादके नाम से जाना जाता है, जैसे विचारधाराओं से हमारा परिचय होता है। इन के माध्यम से स्त्रीको समझने का एक नया पाठहमारे समक्ष प्रस्तुत होता है, जो स्त्री को स्त्री के नजरिए से समझने की बात करता है। भारतीय संदर्भ में विमर्श के बात की जाए तो यह एक इंफॉर्मेशन है जो ज्ञान के रास्ते से गुजर कर स्वतंत्रताकी चेतना पैदा करता है ।

वीरेंद्रजैन ने अपने उपन्यासों में बदलते परिवेश के अनुसार बदलती पारिवारिक और नारी की स्थिति और उनके संघर्ष और रिश्तों के संघर्षों का चित्रण अपने पात्रों के द्वारा बहुत ही सजीव रूप से किए हैं। लेखक ने अपने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को लेकर लिखते हुए पारिवारिक संबंधों के बीच जो प्रेम, द्वेष भावनाओं के अनुकूल और विपरीत परिस्थितियों का चित्रण बहुत ही श्रेष्ठ रूप से किए हैं। लेखक के सुरेखा पर्व उपन्यास में अनाथ आश्रम में पली–बढ़ी लड़कियों के कमरे में एक दिन अनाथ आश्रम के अध्यक्ष का लड़का घूस आता है सुरेखा जब इसका विरोध करती है तभी वह बोलता है कि," बड़ी शरीफ बनती है अपनी मां का भी पता है तुझे"[1] परिवार परे लड़कियों के आदर्श की बात किया जाता है मगर परिवार में रहते हुए भी लोगों की हीन भावना उनकी परवरिश से ही है। परिवार वालों को अपनी वारिसों को आदर्श और नैतिकता सिखाते हैं पर औद्योगिक युग में उसका पतन ही देखने को मिलता है।इस प्रकार आश्रम की लड़कियों को उनकी हैसियत का याद दिला कर सभ्य समाज के लोग उस पर हावी होने में प्रयास करते हैं। इतना ही नहीं सहानुभूति जताने के नाम पर उनसे शादी करते हैं और जब जिम्मेदारी का सवाल आता है , तब उनका पति उन्हें छोड़ देता है । इसी उपन्यास की नायिका सुरेखा को ,"उसके पति ने छोड़ दिया क्योंकि उनका प्रति जिम्मेदारी से बचना चाहता था इसलिए वह पलायन कर गया।"[2] विद्या के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है जैसे ही विद्या गर्भवती होती है तो भी नहीं कहते वर बदलने लगते हैं वह नहीं चाहता कि बच्चा जन्म लिए विद्या कहती है कि," विनय नेबच्चे के पेट में रहते हैं मेरे साथ कई बार राक्षस की तरह व्यवहार किया इसी से यह गूंगा, बहरा, अपंगबच्चा मेरे पेट से मुझे इतनी तकलीफ देने के बाद निकला है।"[3] सात महीने बाद जन्मा यह बच्चा मांसपिण्ड से अधिक कुछ नहीं था।

हमारे भारतीय समाज में विवाह संबंध के बारे में लड़कियों से उनकी इच्छा अनिच्छा कभी पूछीनहीं जाती। लड़के की पसंदगी के संबंध में लड़कियों की कोई राय मायने नहीं रखती। अधिकतर लड़कियों की शादी का निर्णय उसके माता–पिता ही लेते हैं या उसकी परिस्थिति के अनुसार इसका निश्चय होता है। विद्या का विवाह भी उसकी मम्मी ने अच्छा सा लड़का देखकर तय कर दिया। विद्या हायर सेकेंडरी तक पढ़ी है। जिस लड़के के साथ विद्या का विवाह तय हुआ वह ना तो अधिक पढ़ा लिखा था और ना ही संस्कारी। विनय ने विद्या की मम्मी को अपने बारे में बहुत सी बातें गलत बताई थी। स्वयं विनययह बात स्वीकार करते हुए कहा है कि," मेरी पत्नी को यह मालूम नहीं कि मैं कहां तक पढ़ा हूं। उससे हमने इंटर पास बताया है।"[4] इतना ही नहीं "और भी बहुत सी बातें हैं उस नवागन्तुक को झूठी और बेबुनियाद बतलाई गई थी"।[5] जिसकी वजह से विद्या की जिंदगी बर्बाद होकर रह जाती है और जल और कपट से भरे इस संबंध में विद्या घुटन सी महसूस करती है। कभी–कभी परिस्थिति वश, आयु या फिर पारिवारिक स्थिति के कारण स्त्री की राय या उसकी इच्छाएं कभी मायने नहीं रखती इससे उसकी जिंदगी ही नहीं बल्कि परिवार ही नष्ट हो जाता है।

कई निर्दोष स्त्रियांसमाज के अत्याचार, शोषण एवं पाशविकता की वजह सेसगर्व सिर ऊंचा रखकर जी नहीं पाती। कमरे की चार दीवारों के बीच से शारीरिक व मानसिक यातनाएं दी जाती है । वह स्वयं अपनी रक्षा करने में कभी–कभी असमर्थ हो जाती है।

उनके प्रतिदान उपन्यास में नरेंद्र अपनी शादीदहेज के बिनाप्रभा से करता है ।इससे खुश होकर वह अपने पति से मिले प्रेम के बदले में अपने आपको परिवार के लिए समर्पित कर देती है। परिवार के सुख में ही उसका सुख है , अपनी छोटे देवरों की परवरिश के लिए गर्भनिरोधक सामग्री लेकर," चार–पांच वर्षों के लिए प्रभा ने स्वयं को समेट लिया। अपनेतमाम इच्छाएं, कामनाएं मन में संजोकर आगामी अतीत के लिए"। [6] जिनके लिए प्रभा ने इतना बड़ा त्याग किया वहीं देवर मनीष ने गर्भवती प्रभाकर के पेट में लात मारी जिससे गर्भ में ही बच्चा मर गया और प्रभा बच्चे के लिए तड़पने लगी। डॉक्टर ने साफ बताया कि प्रभा कभी मां नहीं बन सकती है।परिवार वाले ही स्त्री के लिए कालबन जाते हैं। यहां लेखक ने नारी के उत्कृष्ट त्याग का उल्लेख करते हुए किए हैं कि स्त्री अपने परिवार के लिए अपने अस्तित्व को भी त्याग कर सकती है। वही बदलते परिवेश में प्रभाके ससुराल वालेअपने पीढ़ी को आगे बड़ाने की सोचके विपरीतअपने स्वार्थ पर ध्यान केंद्रित किए हैं। सुरेखा पर्व उपन्यास में वीरेंद्र जैन ने विद्या के पात्र के द्वारा उसके पति का व्यवहार कैसे उसकी खुशियों से वंचित कर देता है इसका विवरण किया है और वह स्वतंत्र रूप से जीने की सोच लेती है। पति पत्नीका साथ ना दे तो उसका

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

जीवन आधार ही टूट जाता है तो इसलिए उसने यह निर्णय लिया। विद्या ने बड़ी अनुनय से कहा "मैं अब उनके साथ नहीं रह सकती आप ही ने कहिए कि यह मुझे तलाक दे दें।"[7] यहां स्त्री के बदलते विचार से हम परिचित हो सकते हैं। बदलती परिस्थितियों मैं औरत घुटन कि जीवन जीना नहीं चाहती। परिवार वाले भी उसकी स्वच्छंदता का ध्यान रखते हुए उसके निर्णय का साथ देते हैं।पत्नी को यातना देकर उसके दुख दर्द में आनंद उठाना पुरुषों की समाज में कमी नहीं है ऐसे पति से तंग आकर अलग होना चाहती है स्त्रियां। सुरेखा पर्व उपन्यास की विद्या कहती है," तो क्या इसी तरह तिल–तिल कर मरते हैं, लेकिन मैं इस तरह नहीं मारूंगी तुम देखना किसी दिन मैं बच्चों को लेकर यहां से भाग जाऊंगी"।[8] आधुनिक युग में औरत अपना जीवन स्वतंत्रता रूप से जीना चाहती है फिर भी अपने बच्चों का जिम्मेदारी भी वह उठाती ही है। इसलिए परिवार वाले भी उसके जीवनऔर बच्चों की सुरक्षा के लिए उसका साथ देते हैं। पति पत्नी में परस्पर प्रेम की भावना की एक परिवार का नियम है अगर यह परस्पर प्रेम ही टूट जाता है तो समाज का जो व्यवस्थित रूप है वह भी बिगड़ जाता है। वीरेंद्र जैन ने सुरेखा पर उपन्यास की नायिका विद्या के द्वारा का उल्लेख किए है। अपने पति के व्यवहार से तंग आकर उसकी तुलना अपने पति के दोस्त यति के साथ करती है।यति के प्रति आकर्षित होकर उसके साथ जीवन बिताना चाहती है ,"यति के साथ रहकर मैं कुछ ज्यादा ही बेतकल्लुफ हो आई। यति हमेशा मुझे सहानुभूति ही नहीं , स्नेह देने का प्रयास करते हैं।"[9] धोखा से की जाने वाली शादियां जल्दी ही टूट जाते हैंरिश्तेदारों का प्यार नहीं मिलने का परवाह नहीं करती मगर पति से उसे प्यार नहीं मिला तो उसका जीवन अस्त–व्यस्त हो जाता है। अधिकरण के बदलते परिवेश में नारी स्वच्छंद रूप से अपने विचार और अपने जीवन जीने का निर्णय खुद लेती है, इससे परिवार की संरचना भी बदल जाता है।

अभी रहीम ने उचितकहा हैं कि,"रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय टूटे से फिर ना जुड़े जुड़े गांठ पड़ जाए।" अथवा परिवार विखंडित ना हो इसके लिए जरूरी है कि आप अपनों सेरिश्तेदारी, मित्रता, सद्भावना,सम्मान, सेवा, आदर्श औरनैतिकता की भावना से परिवार में संघर्ष समाप्त करने की यह सबसे बड़ी तथ्य है।परिवार कभी समाप्त नहीं हो सकते जितनी भीपरिवेश बदले वह आधुनिकता हो या औद्योगिकता सिर्फ स्वरूप बदल सकता है।यह हमारी जिम्मेदारी है कि पारिवारिक की संरचना को बखूबी सुचारू रूप से निभाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुरेखा पर्व उपन्यास पृष्ठ सं0 12।
2. वहीपृष्ठ– 13।
3. वही पृष्ठ– 29।
4. वही पृष्ठ– 22।
5. वही पृष्ठ– 22।
6. प्रतिदान उपन्यास पृष्ठ–90।
7. सुरेखा पर्व उपन्यास पृष्ठ– 63।
8. वही पृष्ठ– 63।
9. वही पृष्ठ– 33।

*****